बेसनगर (विदिशा)

हिलियोडोरस स्तम्भ (खामबाबा)

सांस्कृतिक जन–जागरण अभियान के अन्तर्गत

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण

मँदिर सर्वेक्षण परियोजना (उत्तरी क्षेत्र) भोपाल (म. प्र.)

2008

बेसनगर, विदिशा

मानव मृण मूर्तियां

बेसनगर (23° 30' उ 77° 45' पू) के पुरावशेष विदिशा रेल्वे स्टेशन से लगभग तीन किलोमीटर पश्चिम में स्थित है। यह स्थल प्राचीन समय में महत्वपूर्ण राजनैतिक, धार्मिक तथा व्यापारिक केन्द्र रहा है। यहाँ से कई राजमार्ग, पाटलीपुत्र से उज्जैन तथा श्रावस्ती से प्रतिष्ठान की ओर जाते थे। ई0 पूर्व पांचवी शताब्दी में यह उज्जयिनी महाजनपद का समृद्धशाली नगर था। विदिशा, धसान नदी (प्राचीन दशार्ण नदी) के क्षेत्र में स्थित होने से दशार्ण प्रदेश की राजधानी रही है। दशार्ण प्रदेश की तलवार तथा लौह हथियार प्रसिद्ध थे। ब्राह्मण, बौद्ध, जैन साहित्य तथा अभिलेख एवं मुद्राओं में इस क्षेत्र का वर्णन मिलता है। इनमें बेसनगर के प्राचीन नामों की जानकारी मिलती है जिनमें प्रमुख नाम वैस्सनगर, बेसनगर, वैश्यनगर, विश्वनगर, विदिशा, वेदसा, भैलसा, भिल्लस्वामिपुर इत्यादि है। ऐसा माना जाता है कि वनवास के समय यहां राम आये थे, जिससे यह स्थल **चरण तीर्थ** के नाम से भी प्रसिद्ध है। वाल्मिकि रामायण में उल्लेख मिलता है कि राम के सबसे छोटे भाई शत्रुघ्न ने अपने पुत्र शत्रुघाति को विदिशा का राज्य दिया था। प्राचीन भारतीय शब्दकोश में आधुनिक बेसनगर का नाम विश्वनगर बताया है। ऐसा माना जाता है कि इस नगर को सूर्यवंशी राजा रुक्मांगद ने ही बसाया था तथा विष्णु का विमान भी यहीं उतरा था। सम्राट् बनने से पूर्व अशोक विदिशा तथा उज्जैन का राज्यपाल था। उसने विदिशा के सेठ की पुत्री देवी से विवाह किया था। उसके पुत्र महेन्द्र तथा पुत्री संघमित्रा सांची से बौद्ध धर्म का प्रचार करने सर्व प्रथम, श्रीलंका गये थे। अशोक ने अपनी पत्नी देवी के आग्रह पर वेदिसगिरि (सांची) पर स्तूप का निर्माण किया था। प्राचीन समय में सांची भी बेसनगर का महत्वपूर्ण अंग था। बेसनगर स्थित हिलियोडोरस स्तंभ (खामबाबा) से वैष्णव धर्म के विषय में जानकारी प्राप्त होती है तथा ऐसा भी ज्ञात होता है कि विदिशा में भागभद्र के दरबार में तक्षशिला से यवनदूत हिलियोडोरस आया, उसने वैष्णव धर्म की अच्छाईयों को देखकर भागवत धर्म स्वीकार किया, विष्णु मन्दिर का निर्माण भी किया था एवं गरुड़ स्तंभ की स्थापना की। मगध के शासक पुष्यमित्र शुंग के समय विदिशा पश्चिम क्षेत्र की राजधानी मानी जाती थी। शुंगकाल में सांची के स्तूप के विकास में विदिशा के निवासियों ने भी अपना योगदान दिया था। विदिशा में (बेसनगर) हाथीदांत का कार्य अधिक होता था, तथा हाथी दांत का कार्य करने वाले कारीगर भी प्रसिद्ध थे। उनके द्वारा सांची स्तूप की चारों दिशाओं के तोरण द्वार निर्मित किये गये जो हीनयान कला के महत्वपूर्ण उदाहरण माने जाते हैं। कालिदास रचित **मेघदूत** तथा **मालविकाग्निमित्रम्** में इस क्षेत्र की भौगोलिक तथा तत्कालीन घटनाओं का वर्णन किया है। उन्होंने वेत्रवति (बेतवा) का बहुत सुन्दर वर्णन किया है।

तेषां दिक्षु प्रथितविदिशालक्षणां राजधानीं गत्वा सद्यः फलमविकलं कामुकत्वस्य लब्धा
तीरोपान्तस्तनितसुभगं पास्यसि स्वादु यस्मात्सभ्रूभङ्गं मुखमिव पयो वेत्रवत्याश्चलोर्मि ।।25।। पूर्वमेघ

बेसनगर का क्षेत्र सातवाहन, कुषाण, पश्चिम भारत के क्षत्रप, पद्मावति (पवाया) के भारशिव नागवंशी शासकों के अन्तर्गत रहकर बहुत ही विकसित हुआ। गुप्तकाल में चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य द्वितीय की मालवा विजय के उपलक्ष्य में विदिशा के निकट उदयगिरि में गुफाओं का निर्माण हुआ, जिनके अभिलेख गुफाओं में देखने को मिलते हैं। बेसनगर के दुर्जनपुरा से प्राप्त रामगुप्त के समय की तीन जैन प्रतिमाओं के पादपीठ पर उत्कीर्ण लेख से गुप्त सम्राट रामगुप्त के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी मिली है। विदिशा के "भैलसा" नाम से यह निष्कर्ष निकाला गया कि बेतवा के तट पर भिल्लस्वामि (सूर्य) का विशाल मन्दिर था, परन्तु यह मन्दिर कहाँ था, ज्ञात नहीं हो सका है। इसकी खोज की जाना आवश्यक है।

दसवीं–ग्यारहवीं शताब्दी के पश्चात् विदिशा, बेसनगर से हटकर, वर्तमान विदिशा के क्षेत्र में बस गया। जिसका विकसित स्वरूप आज विद्यमान है। प्रतिहार, परमार तथा मालवा के सुल्तानों के पश्चात् विदिशा का यह क्षेत्र ग्वालियर के मराठा शासकों (सिंधिया) के अन्तर्गत आकर बहुत विकसित हुआ। नया विदिशा बसने का एक प्रमुख कारण यह भी माना जाता है कि

लौह सामग्री

बेस तथा बेतवा में निरन्तर बाढ़ आती रही तथा कभी अग्नि तथा कभी बाढ़ से बेसनगर नष्ट हो जाता था। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा इस क्षेत्र में कई स्थानों पर पुरातात्विक उत्खनन किये गये, जिनसे ये तथ्य उजागर हुए। साथ ही मिट्टी की विभिन्न परतों में जले हुए अवशेष भी प्राप्त हुए हैं। इन उत्खननों से प्राचीन इतिहास के विषय में ठोस प्रमाण मिले हैं, फलस्वरूप विभिन्न युगों की सभ्यताएं प्रकाश में आई।

आजादी के पूर्व ग्वालियर राज्य के पुरातत्व विभाग द्वारा किये गये उत्खनन से प्राप्त पुरावशेष ग्वालियर, विदिशा तथा अन्य संग्रहालयों में देखे जा सकते हैं। इस क्षेत्र की विश्व प्रसिद्ध प्रतिमाएं भारतीय संग्रहालय, कोलकाता में भी देखी जा सकती हैं। इनमें प्रमुख शुंगकालीन कल्पवृक्ष तथा यक्षी प्रतिमा है। शैली के आधार पर ये प्रतिमाएं लगभग बाईस सौ वर्ष प्राचीन मानी जाती है।

पाषाणकालीन संस्कृति के अवशेषों से लेकर मध्यकालीन संस्कृति तक के जो अवशेष इस क्षेत्र से प्राप्त होते हैं, उनसे इस क्षेत्र की सांस्कृतिक विकास की क्रमबद्धता का ज्ञान होता है। यह क्षेत्र शैलाश्रयों तथा उनके चारों ओर बिखरे पाषाणकालीन उपकरणों से परिपूर्ण है।

मध्यप्रदेश में विशेष रूप से बेसनगर क्षेत्र के अन्तर्गत ताम्राश्मकालीन अवशेषों में आहाड़ तथा मालवा सभ्यता के अवशेषों एवं उस समय के मृद्भाण्डों का मिलना महत्वपूर्ण माना गया है, परन्तु बेसनगर से महाभारतकालीन चित्रित धूसर मृद्भाण्डों का मिलना भी महत्वपूर्ण है। पलवल, दिल्ली, मथुरा, कुरुक्षेत्र, अहिच्छत्र, हस्तिनापुर, रूपड़, कोटला निहंग, मुरैना जिले में कुतवार, गिलुलीखेड़ा इत्यादि स्थलों पर चित्रित धूसर मृद्भाण्ड उत्खनन एवं ऊपरी सतह पर पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं। उज्जैन के आस पास वैश्या टेकरी क्षेत्र में तथा सांदिपनी आश्रम के आस पास भी ऊपरी सतह पर इस प्रकार के मृद्भाण्ड सर्वेक्षण के अन्तर्गत प्राप्त हुए हैं। ये मृद्भाण्ड लौहयुग अथवा महाभारतकालीन संस्कृति के विकास के सूचक हैं। परन्तु बेसनगर में चित्रित धूसर मृद्भाण्ड का उत्खनन में मिलना अत्यंत ही महत्वपूर्ण है। हरियाणा, पंजाब में हड़प्पाकालीन मृद्भाण्डों के साथ चित्रित धूसर मृद्भाण्ड मिलना आश्चर्य के साथ महत्वपूर्ण है, उतना ही आश्चर्य बेसनगर में ताम्राश्मयुगीन संस्कृति के मृद्भाण्डों के साथ चित्रित धूसर मृद्भाण्डों का मिलना है, जो दर्शाता है कि ताम्राश्मयुग की समाप्ति के साथ साथ लौहयुग अथवा महाभारतकालीन संस्कृति का प्रारंभ होना है।

प्रो. बी.बी. लाल का मानना है कि "रूपड़, कोटला निहंग इत्यादि स्थलों पर हड़प्पा संस्कृति के मृद्भाण्डों के साथ चित्रित धूसर मृद्भाण्ड प्राप्त हुए हैं।" इसके साथ ही पुरातात्विक सर्वेक्षण के अन्तर्गत मुरैना जिले में एक ओर कायथा मृद्भाण्ड मिले हैं वहीं दूसरी ओर इस जिले में चित्रित धूसर मृद्भाण्ड भी प्राप्त होते हैं। डॉ. वाकणकर कायथा मृद्भाण्ड को प्रि–हड़प्पन मानते थे। भगवानपुरा (हरियाणा) में भी हड़प्पा मृद्भाण्डों के साथ चित्रित धूसर मृद्भाण्डों का "ओवरलेपिंग" हुआ है। इसी परिप्रेक्ष्य में यदि हम विचार करें तो बेसनगर उत्खनन से स्पष्ट हो गया है कि यहाँ ताम्राश्मयुगीन मृद्भाण्डों के साथ चित्रित धूसर मृद्भाण्ड भी प्राप्त होते हैं। एक ओर बेतवा तट पर स्थित रंगई स्थल से आहाड़, मालवा, नवाश्मयुगीन मृद्भाण्ड एवं अवशेषों के साथ नवाश्मयुगीन "सेल्ट" मिला है, वहीं दूसरी ओर बेतवा तट पर स्थित, स्थल पर ताम्राश्मयुगीन संस्कृति के मृद्भाण्ड, नवाश्मयुगीन "सेल्ट" तथा चित्रित धूसर मृद्भाण्ड मिले हैं। यह हो सकता है कि ताम्राश्मयुगीन संस्कृति के अंतिम चरण के साथ ही चित्रित धूसर मृद्भाण्ड भी मिलना याने उनका प्रयोग प्रारंभ हो जाता

हाथी दांत से निर्मित पांसे तथा कंघी

ताम्राश्म युगीन मृण्मूर्तियां

है। बेसनगर के पश्चिम में शुंगकालीन सुरक्षा दीवार के नीचे स्तर पर जो कि मौर्यकाल तथा उसके पहले का स्तर है, उसके भी नीचे केवल चित्रित धूसर मृद्भाण्डों के कई टुकड़े, जो कि उत्तम श्रेणी के थे, प्राप्त हुए। रंगई उत्खनन में डॉ. वाकणकर बेसनगर आये थे। उनका कथन था कि यहाँ कायथा मृद्भाण्ड मिलना चाहिए, परन्तु न मिलने पर उन्होंने बताया कि भविष्य में उत्खनन किया जाता है तो कायथा मृद्भाण्ड अवश्य मिल सकते हैं।

बेसनगर से एक महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई है, जो भारत में सर्व प्रथम हो सकती है, वह यह है कि उत्तरी काले ओपदार मृद्भाण्ड मौर्यकाल तथा कुछ बाद तक महत्वपूर्ण माने गये हैं तथा उसके पश्चात् निर्माण होना बंद हो जाता है। इसके टूट जाने पर तांबे की रिविट तथा पत्ती से जोड़ा जाता था। उत्खनन में इस मृद्भाण्ड का भग्न कटोरा यथा स्थिति में मिला उसमें तांबे की रिविट लगी थी तथा साथ में तांबे की पत्ती भी प्राप्त हुई जिससे वह जोड़ा गया था। बेसनगर कई बार बाढ़ तथा अग्निकाण्ड से उजड़ा तथा पुनः बसा, जिसके प्रमाण यहाँ युगयुगीन टीले हैं, यहां के निवासी बहादुर थे, फिर भी बाढ़, अग्निकाण्ड तथा युद्ध की बार–बार परेशानी के पश्चात् वर्तमान विदिशा में एक विशाल दुर्ग का परकोटा निर्मित कर बस गये, जिसके प्रमाण प्रत्यक्ष देखे जा सकते हैं। इसके बावजूद भी खामबाबा के क्षेत्र में बसावट निरन्तर वर्तमान युग तक चलती रही।

बेसनगर उत्खनन में लौह सामग्री प्रचुर मात्रा में प्राप्त हुई जो प्राचीन समय की तकनीकी का एक सफल उदाहरण है। इससे यह बात प्रमाणित होती है कि दशार्ण प्रदेश में विशेष रूप से बेसनगर में लौहयुग का प्रारंभ हो गया तथा लोहे की वस्तुएं तथा हथियार निर्मित किया जाने लगे। वैसे विदिशा तथा एरकछ (झांसी के निकट) की तलवारें प्रसिद्ध थी। खामबाबा के निकट विष्णु मन्दिर के अवशेषों में काष्ठ स्तंभ लगाये जाने वाले गढ्ढे (पोस्ट होल्स) के नीचे भारी मात्रा में लोहे की वजनी मोटी–पतली, नुकिली पट्टियाँ या पच्चड़ मिले हैं जो यह प्रमाणित करते हैं कि विशाल काष्ठ स्तंभों को सीधा खड़ा करने के लिये उनके नीचे टेक या टेके लगाये जाते थे। इसके प्रत्यक्ष उदाहरण सांची में स्थित मन्दिर क्रमांक 18 में देखे जा सकते हैं। यही प्रयोग वर्तमान में भी संरक्षण कार्य में किया गया है।

बेतवा तट पर स्थित टीले

कालानुक्रम

काल	सांकेतिक अवशेष	कालनिर्णय
काल – I (अ)	मृद्भाण्ड पूर्व के लघु अश्मोपकरण (अज्यामितिय)	
काल – I (ब)	मृद्भाण्ड पूर्व के लघु अश्मोपकरण (ज्यामितिय एवं अज्यामितिय)	
काल – II (अ)	ताम्राश्मकाल (आहाड़ सभ्यता)	लगभग अठारहवीं शताब्दी ई. पू. से नवीं शताब्दी ई.पू.
काल – II (ब)	ताम्राश्म–नवाश्म काल (BSN-8)	
काल – II (ब)	चित्रित धूसर मृद्भाण्ड (PGW) (BSN-1,4)	
काल – III (अ)	प्राक् मौर्यकाल (उत्तरी काले ओपदार मृद्भाण्ड से पूर्व की संस्कृति)	लगभग नवीं शताब्दी ई.पू. से पांचवी शताब्दी ई.पू.
काल – III (ब)	उत्तरी काले ओपदार मृद्भाण्ड	लगभग पांचवी शताब्दी ई.पू. से द्वितीय शताब्दी ई.पू. तक
काल – III (स)	शुंग–सातवाहन काल	लगभग द्वितीय शताब्दी ई.पू. से प्रथम शताब्दी ई. के प्रारंभ तक
काल – IV (अ)	नाग–कुषाण काल	प्रथम शताब्दी ई. से तृतीय शताब्दी ई. तक
काल – IV (ब)	क्षत्रप–गुप्तकाल	तृतीय शताब्दी ई. से पांचवी शताब्दी ई. तक
काल – V	पूर्व मध्यकाल	नवीं शताब्दी ई. से ग्यारहवीं शताब्दी ई. तक
काल – IV	उत्तर मध्यकाल से आधुनिक समय तक	ग्यारहवीं शताब्दी से वर्तमान याने मराठा–नवाब युग

अधीक्षण पुरातत्वविद्
भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण
मँदिर सर्वेक्षण परियोजना (उ.क्षे.)
312, सी.जी.ओ. काम्पलेक्स, निर्माण सदन, एम.पी. नगर, भोपाल (म.प्र.)
फोन : 0755-2557360, 2557354